हम वज़ू कैसे करें?

वज़ू के तरीक़े की सचित्र व्याख्या एवं इस महान धार्मिक प्रतीक के के बारे में कुछ बातें

हम वज़ू कैसे करें?

वज़ू के तरीक़े की सचित्र व्याख्या एवं इस महान धार्मिक प्रतीक के के बारे में कुछ बातें

مركز أصول
OsoulCenter
www.osoulcenter.com

ح جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة ، ١٤٤٥ هـ

مركز أصول

سلسلة يومي الأول في الإسلام (١): كيف أتوضأ: شرح مصور لكيفية الوضوء مع وقفات مع هذه الشعيرة العظيمة باللغة الهندية. / مركز اصول - ط ١. .- الرياض ، ١٤٤٥ هـ

٤٨ ص ؛ ١٤.٨ x ٢١ سم

رقم الإيداع: ١٤٤٥/٢٤٨٥١

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٤٣٨-٤٠-٤

- इस संस्करण को केंद्र ने तैयार तथा डिज़ाइन किया है।
- केंद्र इस संस्करण को किसी भी माध्यम से मुद्रित एवं प्रकाशित करने की अनुमति देता है, इस शर्त के साथ कि संदर्भ का उल्लेख हो और मूल टेक्स्ट में कोई बदलाव न किया जाए।
- मुद्रित करने की अवस्था में केंद्र द्वारा अनुमोदित गुणवत्ता मानकों का पालन करना ज़रूरी होगा।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से,
जो बड़ा दयालु एवं अत्यंत दयावान है।

भूमिका

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान वालों का पालनहार है और दुरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद और आपकी तमाम आल-औलाद और साथियों पर। तत्पश्चात :

इस्लाम पवित्रता एवं शुद्धि का धर्म है; शरीर, वस्त्र और स्थान की गंदगी से शुद्धि तथा पापों, अनैतिकता और दुष्कामना से आत्माओं की शुद्धि।

अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए बहुत-सी परिस्थितियों में पवित्रता को अनिवार्य किया है, उनमें से एक नमाज़ भी है, जो इस्लाम का स्तंभ और बन्दा एवं उसके रब के बीच महान संबंध है।

इसकी महानता का प्रमाण यह है कि अल्लाह तआला ने इसमें प्रवेश करने से पहले कुछ सम्मानजनक परिचायकों (सूचकों) को अनिवार्य किया है, जैसे अज़ान, अच्छा कपड़ा पहनना, पवित्रता, वज़ू, स्नान एवं तयम्मुम।

अल्लाह तआला का फ़रमान है : ''ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो, तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को कुहनियों समेत धो लो और अपने सिरों का मसह करो तथा अपने पाँवों को टखनों समेत (धो लो)। और यदि तुम जनाबत की हालत में हो, तो स्नान कर लो। तथा यदि तुम बीमार हो, अथवा यात्रा में हो, अथवा तुममें से कोई शौचकर्म से आया हो, अथवा तुमने स्त्रियों से सहवास किया हो, फिर कोई पानी न पाओ, तो पाक मिट्टी का क़सद करो और उससे अपने चेहरों तथा हाथों का मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुमपर कोई तंगी करे। लेकिन वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और ताकि अपनी नेमत तुमपर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो।'' [सूरा अल-माइदा : 6]

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जब तुममें से किसी का वज़ू टूट जाए, तो अल्लाह उसकी नमाज़ स्वीकार नहीं करता है, यहाँ तक कि वज़ू कर ले।'' इसे बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

वज़ू की बहुत-सी फ़ज़ीलतें हैं : यह आधा ईमान है। इसके कारण अल्लाह गुनाहों को मिटा देता है, दर्जे को ऊँचा करता है, यह जन्नत का रास्ता है, क़यामत के दिन मुसलमान के लिए रोशनी है, इससे शैतान का बंधन खुलता है, यह क़यामत के दिन मुसलमान की पहचान होगी कि वे रौशन चेहरों के साथ उठाए जाएँगे, उनके वज़ू के अंग जैसे चेहरे, हाथ तथा पैर चमकते होंगे।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जब कोई मुस्लिम या मोमिन बंदा वज़ू करता है और अपना चेहरा धोता है, तो उसके चेहरे से वह सारे गुनाह पानी के साथ या पानी की अंतिम बूँद के साथ निकल जाते हैं, जिनकी ओर उसने अपनी आँखों से देखा था। फिर जब वह अपने हाथों को धोता है, तो पानी के साथ या पानी की अंतिम बूँद के साथ उसके हाथ के वह सारे गुनाह निकल जाते हैं, जो उनके हाथों के पकड़ने से हुए थे। फिर जब वह अपने पैरों को धोता है, तो पानी के साथ या पानी की अंतिम बूँद के साथ उसके पैरों से वह सारे गुनाह निकल जाते हैं, जिनकी ओर उसके पाँव चलकर गए थे। यहाँ तक कि वह गुनाहों से पवित्र होकर निकलता है।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से ही रिवायत है, उन्होंने कहा कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते सुना है : ''मेरी उम्मत के लोग क़यामत के दिन इस दशा में बुलाये जायेंगे कि वज़ू के प्रभाव के कारण उनके चेहरे और हाथ-पाँव चमकते होंगे।'' इसे बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

विषय सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1	इस्लाम में पवित्रता का स्थान	11
2	नमाज़ के लिए आवश्यक पवित्रता	13
3	महिला से संबंधित विशेष अहकाम व आदेश	17
4	पेशाब-पाखाना के आदाब	19
5	हम वज़ू कैसे करें?	23
6	जनाबत का गुस्ल (अपवित्रता से पवित्र होने के लिए स्नान) कैसे करें?	34
7	पवित्रता से संबंधित विशेष परिस्थितियाँ	35
8	मूल्यांकन प्रश्न	40

इस्लाम में पवित्रता का स्थान :

इस्लाम में पवित्रता का बहुत बड़ा मूल्य है। यह केवल जल के द्वारा अनुभव की जाने वाली शुद्धि तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है गंदगी एवं अस्वच्छता से सफाई। स्वच्छता, चाहे वह दृश्य हो या अदृश्य (भौतिक हो अथवा अध्यात्मिक)।

जहाँ तक अदृश्य या अध्यात्मिक पवित्रता की बात है, तो यह अल्लाह तआला के साथ शिर्क, व्यर्थ आस्थाओं एवं अंध विश्वास से मुक्त होने तथा अनैतिकता जैसे ईर्ष्या, घृणा, मुसलमानों के प्रति दुर्भावना, विद्वेष, कंजूसी, विश्वासघात और अन्य से दिल के ख़ाली होने का नाम है।

जहाँ तक संवेदी पवित्रता की बात है, तो यह महसूस की जाने वाली गंदगी से पाक होने या उस अवस्था से पवित्र होने का नाम है जो कुछ प्रकार की इबादतों, जैसे नमाज़ आदि के लिए रुकावट बनती है। इस स्थिति को इस्लाम में ''हदस'' कहा जाता है। यह वज़ू अथवा तयम्मुम से ख़त्म होता है, और यदि बड़ा हदस (अपवित्रता) हो, तो स्नान की आवश्यकता होती है।

नमाज़ के लिए आवश्यक पवित्रता :

नमाज़ बन्दा और उसके रब के बीच वार्तालाप का नाम है। इसलिए अपने रब के सामने खड़ा होते समय मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह हर संभव रूप से अच्छी तरह पाक व पवित्र, श्रद्धा से ओत प्रोत और समर्पित हो। इसीलिए अल्लाह तआला ने मुसलमान पर वाजिब किया है कि जब वह नमाज़ का इरादा करे तो सभी गंदगियों एवं नापाकियों से अपने आपको, अपने कपड़े को एवं नमाज़ के स्थान को पाक कर ले।

वह चीज़ें जिनसे नमाज़ी को पाक होना ज़रूरी है :

नमाज़ी को अपनी नमाज़ से पहले बड़े तथा छोटे नापाकी (अशुद्धि) और गंदगी से पाक होना ज़रूरी है। निम्न में उसका विवरण प्रस्तुत है :

हदस (नापाकी) : यह एक अभौतिक स्थिति है, जो बदन में होती है और नमाज़ से रोकती है। इसे दो प्रकारों में विभाजित किया गया है :

1. **छोटा हदस (छोटी नापाकी) :** यह मूत्र, मल या हवा के निकलने के कारण होता है। इसी तरह नींद से भी होता है। यह हदस (नापाकी) वज़ू करने से समाप्त हो जाता है।

2. **बड़ा हदस (बड़ी नापाकी) :** इसे जनाबत भी कहते हैं। यह सहवास करने या वीर्यपात होने से होता है। यह स्नान करने और पूरे शरीर पर पानी बहाने से दूर हो जाता है।

जहाँ तक नजस अर्थात गंदगी की बात है, तो यह अनुभव की जाने वाली गंदगी है, जैसे कि पेशाब, पाखाना आदि बहता हुआ रक्त आदि। पानी से इसे इस प्रकार से धोने से कि यह समाप्त हो जाए, यह ख़त्म हो जाता है।

पेशाब के निकलने को हदस (अपवित्रता) कहा जाता है तथा स्वयं पेशाब को नजस (गंदगी) कहा जाता है।

नमाज़ी के लिए ज़रूरी है कि वह सभी प्रकार के हदस (नापाकी) एवं गंदगियों से पाक हो।

यदि छोटा हदस (छोटी नापाकी) हो तो वज़ू करे।

यदि बड़ा हदस (बड़ी नापाकी) हो तो स्नान करे।

इसी प्रकार नमाज़ी के लिए ज़रूरी है कि वह तीन चीज़ों को भौतिक गंदगियों से पाक कर ले।

महिला से संबंधित विशेष अहकाम व आदेश :

पवित्रता के अहकाम के मामले में महिला मर्द ही की तरह है, परंतु अल्लाह तआला ने उसे इस बात में अलग किया है कि उसे माहवारी आती है, वह गर्भवती होती है और बच्चा जनती है। यह अल्लाह की हिकमत में से है, ताकि मानव जाति धरती पर फलती-फूलती रहे। शरीयत ने उसकी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक गठन का ख़्याल रखा है, इसलिए माहवारी एवं निफ़ास (यह वह खून होता है, जो गर्भावस्था से गर्भ के खाली होने के बाद महिला के शरीर से निकलता है) की अवस्था में उससे नमाज़ को माफ़ कर दिया है। इन दोनों हालतों में महिला पर पवित्रता अपनाना एवं नमाज़ पढ़ना नहीं है। माहवारी एवं निफ़ास के समाप्त होने के बाद महिला पर स्नान करना वाजिब है।

जब महिला अपने बाल को चोटी की शक्ल में बाँधे, तो उसे इस चोटी को जनाबत, माहवारी या निफ़ास के लिए नहाते समय खोलने की आवश्यकता नहीं है, यदि पानी सर के सभी बालों की जड़ों तक पहुँचता हो।

पेशाब-पाखाना के आदाब :

इस्लाम ने मुसलमान के पूरे जीवन को व्यवस्थित किया है, ताकि वह जानवरों के जीवन से अलग समृद्ध जीवन जीए। यहाँ तक कि उन मामलों में भी जो इस्लाम से अनभिज्ञ लोगों की कल्पना से भी दूर हों, जैसे कि शौच का तरीक़ा भी बतलाया है, जिसकी ज़रूरत प्रत्येक मनुष्य को पड़ती है।

इस्लाम में शौच करने के नियम :

- शौचालाय में प्रवेश करते समय बायाँ पैर पहले दाख़िल करें और यह दुआ पढ़ें : **"ऐ अल्लाह, मैं नापाक जिन्नों और नापाक जिन्नियों से तेरी शरण माँगता हूँ।"**
- उससे निकलते समय दायाँ पैर पहले निकालें और यह दुआ पढ़ें : "ऐ अल्लाह, मैं तेरी ही क्षमा चाहता हूँ।"
- शौच करते समय क़िबला को न आगे की तरफ करें और न पीछे की तरफ तथा शौचालय से बाहर मल-मूत्र त्याग करते समय इसका अधिक ध्यान रखें।
- शौच करते समय लोगों की दृष्टि से पर्दा करें, चाहे शौचालाय में हो या उससे बाहर।
- लोगों के पथ पर, ऐसे स्थान पर जहाँ लोग बैठते हैं या ऐसी जगह पर शौच न करें,जहाँ शौच करने से उन्हें तकलीफ़ होती है।
- ठहरे हुए पानी में शौच न करें।
- जीव-जंतुओं के सुराखों या इन जैसे स्थानों में शौच न करें।
- भरसक प्रयास करें कि पेशाब की कोई बूंद उड़कर आपके कपड़े या शरीर पर न पड़े।

- इस्तिंजा (पाखाना या पेशाब निकलने की जगह को पानी से धोना) या इस्तिज्मार (पाखाना या पेशाब निकलने की जगह को पत्थर या पेपर इत्यादि से पोंछना) करते समय बाएँ हाथ का प्रयोग करें।

केवल इस्तिंजा करना पर्याप्त है। केवल इस्तिज्मार करना भी पर्याप्त है। इसी तरह दोनों को एक साथ करना भी जायज़ है। यह इस्लाम की आसानी में से है।

इस्लाम मुसलमान को व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखने, मसलन शौच के बाद दोनों हाथों को धोने एवं पानी तथा उपलब्ध स्वच्छता प्रदान करने वाली चीज़ों से साफ़ करने का निर्देश देता है।

हम वज़ू कैसे करें?

वज़ू के तरीक़े की व्यहारिक सचित्र व्याख्या

वज़ू से पहले निम्नलिखित बातों को जान लेना ज़रूरी है :

- नीयत के बिना वज़ू नहीं होता, इख़्लास के बिना नीयत नहीं होती एवं नीयत का स्थान दिल है, ज़बान नहीं।

- वज़ू के अंगों को धोने में तरतीब ज़रूरी है। इसी तरह लगातार करना भी ज़रूरी है। न तो हम एक अंग के स्थान पर दूसरे अंग को पहले धो सकते हैं और न एक अंग के पश्चात् उसके बाद वाले अंग को धोने में देर कर सकते हैं।

बारकोड स्कैन करके वज़ू के तरीक़े से संबंधित संपूर्ण शैक्षणिक सामग्री देखें।

1

नीयत : हमें सबसे पहले नीयत करनी होगी (अर्थात, हम दिल से इरादा करेंगे, शब्दों के द्वारा बोल कर नहीं)। ऐसा वज़ू जो हदस को दूर करने या इस तरह के कामों के लिए है, वह बिना नीयत के सही नहीं होगा। बिना नीयत के यह इसी तरह होगा जैसे किसी ने इबादत की नीयत के बिना अपने अंगों को धोने का इरादा किया हो। इस विषय में हमारे ऊपर अनिवार्य है कि हम नीयत को केवल सर्वोच्च अल्लाह के लिए ख़ालिस करें।

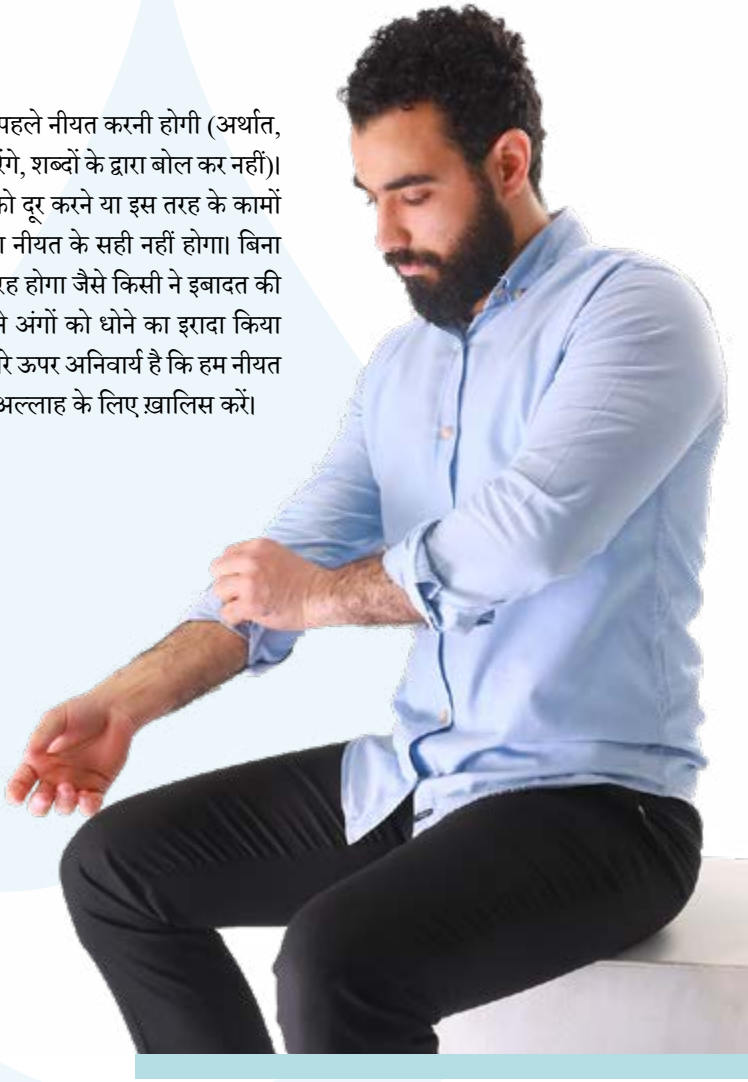

2

बिस्मिल्लाह पढ़ना : वज़ू के आरंभ में बिस्मिल्लाह पढ़ना है। हम "बिस्मिल्लाह" कहकर ही वज़ू शुरू करेंगे। फिर, यदि संभव हो तो मुँह की सफ़ाई के लिए मिस्वाक का प्रयोग करेंगे।

3

दोनों हथेलियों को धोना : हम दोनों हथेलियों को कलाइयों तक तीन बार धोएंगे। उँगलियों के किनारों से आरंभ कर हथेली के जोड़ तक धोएंगे।

4

कुल्ली करना,नाक में पानी डालना एवं नाक झाड़ना :

- **कुल्ली करना :** कुल्ली करने से अभिप्राय मुँह में पानी डालकर उसे मुँह के अंदर हिलाना और फिर बाहर निकाल देना है।

- **नाक में पानी डालना :** दायाँ हाथ से पानी लेना एवं सांस के द्वारा नाक के अंदर खींच लेना।

- **नाक झाड़ना :** नाक झाड़ने से मुराद सांस के द्वारा एवं बाएँ हाथ से नाक से पानी को बाहर निकालना है।

- **यदि रोज़े से न हों,** तो सुन्नत यह है कि कुल्ली करने और नाक में पानी डालने में मुबालग़ा (अतिश्योक्ति) से काम लिया जाए।

- **कुल्ली करने तथा नाक में पानी चढ़ाने के दो तरीक़े हैं :**

    - **एक साथ करना :** पानी का एक चुल्लू लें और आधे से कुल्ली करें और आधा पानी नाक में लें। यह कार्य पानी के तीन चुल्लू से तीन बार करें।

    - **अलग-अलग करना :** यह इस तरह कि कुल्ली के लिए एक चुल्लू पानी लें और फिर अलग से नाक के लिए एक चुल्लू और ऐसा तीन बार करें।

5 **चेहरे को धोना :** चेहरे की सीमा, लंबाई में सर के बाल उगने के नियमित स्थान से ठुड्डी के अंतिम भाग तक तथा चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक है।

- चेहरे को धोते समय उसके समस्त बालों, जैसे हल्की दाढ़ी के बालों, मूँछों, दोनों भौं, पलकों के बालों तथा निचले होंठ के नीचे उगे हुए बालों को धोना वाजिब है।

6

दोनों हाथों को धोना : हम पहले दाएँ हाथ को उँगलियों के किनारों से धोना शुरू करेंगे। दोनों हाथों की उँगलियों को एक-दूसरे के अंदर घुसाकर उनका ख़िलाल करेंगे और फिर कोहनियों तक पानी पहुँचाएँगे। फिर उसी तरह बायें हाथ के साथ भी करेंगे।

7 **सर का मसह करना :** नए पानी से दोनों हाथों को भिगोएंगे, फिर दोनों भीगे हाथों को सर के अगले भाग पर रखेंगे तथा उन्हें गुद्दी तक ले जाएँगे और फिर उसी स्थान तक वापस ले आएँगे जहाँ से आरंभ किया था। सर की इस सीमा के संबंध में गंजे तथा बाल वाले के बीच कोई अंतर नहीं है।

8

दोनों कानों का मसह करना : सर के मसह के बाद जो पानी हमारी उंगलियों में बच जाए, उस पानी से दोनों कानों का मसह करेंगे। कानों के मसह का तरीक़ा यह है कि तर्जनी उंगली को कानों के छेद के अंदर प्रवेश करेंगे और दोनों कानों का मसह करेंगे और अंगूठे से कान के बाहरी भाग का मसह करेंगे। इस तरह हमने कानों के अंदर और बाहर दोनों भागों का मसह कर लिया।

सर के साथ कानों का मसह एक ही बार करना है।

9 **पैरों को धोना :** हम दाएँ पैर से शुरू करेंगे और उसे उंगलियों के किनारों से लेकर टख़ने (वह दो उभरी हुई हड्डियाँ, जो पैर के दोनों किनारों, पिंडलियों और क़दम के जोड़ में रहती हैं) तक धोएंगे, पाँव की उंगलियों के बीच ख़िलाल करेंगे, एड़ी (क़दम का पिछला हिस्सा) तथा दोनों क़दमों के ऊपरी भाग को धोने का विशेष ध्यान रखेंगे, फिर बाएँ पैर को उसी तरह धोएंगे जिस तरह दाएँ पैर को धोया था।

10 **ज़िक्र और दुआ :** वज़ू समाप्त करने के बाद यह दुआ कहना सुन्नत है :

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदे तथा रसूल हैं।"

इतना बढ़ा भी सकता है :

"ऐ अल्लाह, मुझे बहुत ज़्यादा तौबा करने वालों में से बना और ख़ूब साफ़-सुथरा रहने वालों में से बना।"

या इसे भी पढ़ सकता है :

"ऐ अल्लाह, तू पाक है और तेरी ही प्रशंसा है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है। मैं तुझसे क्षमा माँगता हूँ और तेरी ओर लौटकर आता हूँ।"

कुछ महत्वपूर्ण बातें :

1. सर के साथ कानों का मसह केवल एक बार करेंगे। जहाँ तक वज़ू के दूसरे कामों की बात है, तो उनको तीन-तीन बार करेंगे। दो-दो बार भी किया जा सकता है और एक-एक बार भी। कम से कम एक-एक बार वाजिब है।
2. वज़ू के अंगों को धोने के मामले में क्रम का ध्यान रखना ज़रूरी है। किसी अंग के स्थान पर दूसरे अंग को पहले नहीं धोया जाएगा।
3. इसी तरह अंगों को धोने में निरंतरता भी ज़रूरी है। एक अंग को धोने के बाद दूसरे अंग को धोने में देरी नहीं की जाएगी।

जनाबत का गुस्ल (अपवित्रता से पवित्र होने के लिए स्नान) कैसे करें?

जनाबत के गुस्ल के दो तरीक़े हैं। एक वाजिब तरीक़ा और दूसरा पूर्ण तरीक़ा। वाजिब तरीक़ा कुछ इस प्रकार है :

1. हम अपने दिल में बड़ा हदस (बड़ी नापाकी) दूर करने के लिए गुस्ल की नीयत करेंगे।
2. पूरे शरीर पर पानी बहाएंगे, साथ में कुल्ली करेंगे और नाक में पानी डालकर उसे झाड़ेंगे भी।

जहाँ तक पूर्ण स्नान की बात है, तो इससे अभिप्राय वह स्नान है, जिसमें वाजिब एवं मुस्तहब दोनों का ध्यान रखा गया हो। संपूर्ण स्नान का तरीक़ा कुछ इस तरह है :

1. हम सबसे पहले दोनों हथेलियों को धोएँगे,
2. अपने गुप्तांग पर पानी बहाएंगे और उसे बायें हाथ से धोएंगे,
3. पूरा वज़ू करेंगा, परंतु पैरों को गुस्ल के बाद धो सकते हैं।
4. अपने सर को तीन बार धोएंगे।
5. जब महिला अपने बाल को चोटी के रूप में बाँधे हुए हो, तो उसे इस चोटी को जनाबत, माहवारी या निफ़ास के लिए नहाते समय खोलने की आवश्यकता नहीं है, यदि पानी सर के सभी बालों की जड़ों तक पहुँच रहा हो।
6. शरीर का पूरा दायाँ भाग धोएंगे,
7. फिर शरीर का पूरा बायाँ भाग धोएंगे।

पवित्रता से संबंधित विशेष परिस्थितियाँ :

तयम्मुम :

इस्लाम में आसानी पाई जाने की शक्लों में से एक यह भी है कि उसने पानी का विकल्प प्रस्तुत किया है। यदि मुसलमान आसानी से पानी प्राप्त नहीं कर सकता हो, जिससे वह वज़ू एवं गुस्ल करे, जैसे कि वह यात्रा में हो और उसके पास केवल पीने के बराबर पानी हो और उसे पानी बेचने वाला भी न सके या मूल्य अधिक होने के कारण वह ख़रीद पाने में सक्षम न हो।

इसी तरह यदि बीमारी के कारण वह पानी का प्रयोग करने में असमर्थ हो तथा उसके पास कोई ऐसा व्यक्ति न हो, जो उसे वज़ू करने में मदद करे या फिर ऐसी भयंकर ठंडी पड़ रही हो कि पानी का प्रयोग उसे नुक़सान पहुंचा दे या इस प्रकार की कुछ और मजबूरी हो, तो उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ है। तयम्मुम यानी पवित्रता प्राप्त करने के लिए जल के स्थान पर मिट्टी का प्रयोग।

तयम्मुम कैसे करें?

हम अपने दिल में तयम्मुम की नीयत करें, फिर अपने दोनों हाथों को ज़मीन पर एक बार मारें, फिर उससे अपने पूरे चेहरे और दोनों हथेलियों का मसह करें।

छोटे या बड़े हदस (नापाकी) दोनों के लिए तयम्मुम का एक ही तरीक़ा है। तयम्मुम के बाद हर वह इबादत की जा सकती है जिसके लिए तहारत अर्थात पवित्रता शर्त है। जब पानी मिल जाए या इन्सान उसके प्रयोग पर सक्षम हो जाए, तो तयम्मुम का हुक्म ख़त्म हो जाता है और हमपर पाकी के लिए पानी का इस्तेमाल करना वाजिब हो जाता है।

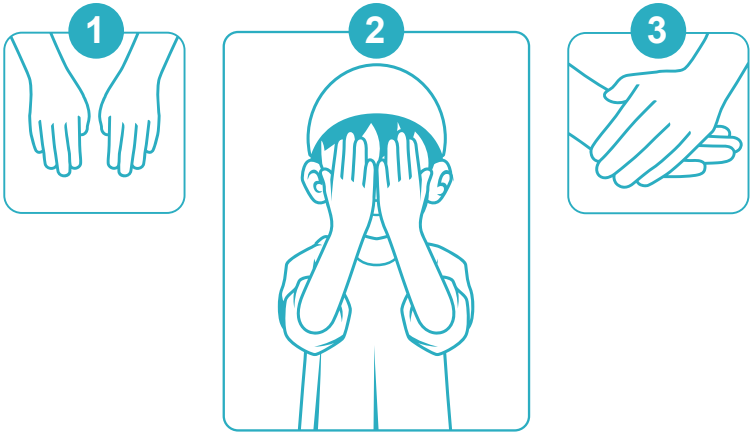

चमड़े एवं कपड़े आदि के मोज़ों पर मसह :

जब मुसलमान चमड़े या कपड़े का मोज़ा पहने हो, तो वज़ू के समय उन्हें निकालना ज़रूरी नहीं है, बल्कि केवल इतना करना पर्याप्त है कि जब वह पैर धोने को पहुँचे तो अपने भीगे हाथों से उन मोज़ों के ऊपरी भाग का मसह कर ले। परन्तु इसके लिए शर्त यह है कि वह उन्हें पवित्रता की स्थिति में पहना हो। अर्थात ऐसे वज़ू के बाद, जिसमें वह अपने दोनों पैरों को धोया हो। यदि ऐसा न हो, तो उनको उतारना ज़रूरी है।

अपने घर में रहने वाले के लिए (मोज़ों पर) एक दिन और एक रात मसह करना जायज़ है, जबकि यात्री के लिए तीन दिन और तीन रातें।

ठहरा हुआ व्यक्ति :
एक दिन एक रात मसह करेगा।

यात्री :
यात्री तीन दिन तीन रात मसह करेगा।

पट्टी पर मसह करना :

अरबी भाषा के शब्द "जबीरा" का अर्थ वह पट्टी है, जिससे टूटे या ज़ख्मी अंग को बाँधा जाता है। यदि यह पट्टी वज़ू के अंगों में से किसी अंग पर हो, तो वज़ू के समय अपने भीगे हाथों से उसपर मसह करना जायज़ है, यहाँ तक कि पट्टी बाँधने की ज़रूरत ख़त्म हो जाए। इसमें यह शर्त नहीं है कि इसको पाक होने का अवस्था में बाँधा गया हो।

यदि वज़ू के उस अंग में से कुछ हिस्सा खुला हो और उसके धोने से कोई नुक़सान न हो, तो वह हिस्सा धोया जाएगा और शेष हिस्सा जिसमें पट्टी है, उसपर मसह किया जाएगा।

अन्त :

अल्लाह तआला ने उस आयत के अंत में कहा है जिसमें वज़ू, स्नान एवं तयम्मुम का आदेश है :

''अल्लाह नहीं चाहता है कि तुमपर कोई मुश्किल पैदा करे, परन्तु वह चाहता है कि तुमको पाक करे, और तुमपर अपनी नेमत को पूरा करे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।''
[सूरा अल-माइदा : 6]

अर्थात : अल्लाह ने जो तुमपर नमाज़ के लिए वज़ू और जनाबत से गुस्ल को फ़र्ज़ किया है या कारण पाए जाने के समय तुमको तयम्मुम का जो आदेश दिया है,

उसके द्वारा अल्लाह तुम्हारे लिए कोई परेशानी, मुश्किल या दिक़्क़त पैदा करना नहीं चाहता है। अल्लाह चाहता है कि तुम पाक हो जाओ। अर्थात वह तुमको भौतिक अथवा अध्यात्मिक गंदगियों से पाक करना चाहता है, ताकि तुमसे उन गुनाहों एवं पापों को दूर कर दे जो तुमसे चिपक गए हैं। इसी तरह अल्लाह तआला इसके द्वारा तुमपर अपनी नेमतों को पूरा करना चाहता है, क्योंकि उसने आसान आदेश दिए हैं, उच्च नैतिक मूल्यों को अपनाने का हुक्म दिया है एवं महान ज़िम्मेदारियाँ प्रदान की हैं, ताकि तुम उसकी नेमतों एवं उपकारों और शरीयतों (धार्मिक प्रावधानों) पर उसका धन्यवाद करो। क्योंकि यदि तुम शुक्र अदा करोगे, तो तुमपर वह अधिक नेमतों एवं उपहारों की बारिश करेगा।

यह (मेरी ओर से है) और अल्लाह बेहतर जानता है। अल्लाह का दुरूद व सलाम हो उसके बन्दे और नबी मुहम्मद पर।

मूल्यांकन प्रश्न

1 (सही) या (ग़लत) लिखें

- [ ] इस्लाम में पवित्रता कपड़ा, शरीर और स्थान तक सीमित है
- [ ] वज़ू बन्दा को उन गुनाहों से पाक कर देता है जो उसकी आँखों, हाथों या पैरों ने किए हैं
- [ ] माहवारी वाली महिला से रोज़ा माफ़ हो जाता है, मगर नमाज़ नहीं
- [ ] पानी को मुँह में लेकर हिलाने और उसे बाहर निकाल फेंकने को इस्तिंशाक़ कहते हैं
- [ ] कुल्ली करना और नाक में पानी डालना, दोनों काम एक ही चुल्लू पानी से करना सही नहीं है
- [ ] वज़ू में चेहरा धोते समय पेशानी (ललाट) को धोना ज़रूरी नहीं है
- [ ] एक ग़लती जो आम है कि वज़ू करने वाला वज़ू में अपने क़दमों का पिछला हिस्सा धोना भूल जाता है
- [ ] जनाबत के ग़ुस्ल की वाजिब सूरत यह है कि कुल्ली करने एवं नाक में पानी चढ़ाकर नाक झाड़ने के साथ साथ पूरे बदन पर पानी बहाया जाए।
- [ ] छोटे हदस (छोटी नापाकी) में तयम्मुम का तरीक़ा बड़े हदस (बड़ी नापाकी) के तयम्मुम से भिन्न है
- [ ] मोज़े पर मसह करने की शर्तों में से यह है कि उन्हें पाक होने की अवस्था में पहना जाए
- [ ] पट्टी पर मसह करना जायज़ है यहां तक कि ज़रूरत ख़त्म हो जाए

2 नमाज़ के लिए वज़ू के वाजिब होने की कोई दलील प्रस्तुत करें?

.....

.....

3 यदि कोई मुस्लिम भूलकर बिना वज़ू के नमाज़ पढ़ ले, तो उसकी नमाज़ :

☐ सही होगी ☐ अमान्य होगी

4 चुनें :

1- वह परिस्थितियाँ जिनके लिए पवित्रता वाजिब है

☐ रोज़ा ☐ नमाज़ ☐ अल्लाह का ज़िक्र

2- पेशाब या पाखाना के निकलने की जगह को पत्थर या टिश्यू से पोंछना, इसे

☐ इस्तिंजा ☐ इस्तिज्मार ☐ इस्तिंसार

मूल्यांकन प्रश्न

5 **वज़ू की तीन फ़ज़ीलतें बयान करें?**

.....

.....

.....

6 **पूरा करें :**

1. नमाज़ी के लिए अपनी नमाज़ से पहले..... और
   .....से पाक होना ज़रूरी है।

2. शौच के नियमों में से है :

.....

.....

3. हम अपने वज़ू को.....कहते हुए शुरू करेंगे।
   फिर यदि हो सके तो..... मुँह को साफ करने के लिए प्रयोग करेंगे।

4. मोज़े पर मसह करने की अवधि घर में रहने वाले के लिए .....
   है और मुसाफिर के लिए ..... है।

7 **इस्लाम ने भौतिक एवं आध्यात्मिक पवित्रता का पाठ पढ़ाया है। इनमें से हर एक का एक-एक उदाहरण पेश करें।**

.....

.....

8 नजस अर्थात गंदगी क्या है?

.....

.....

9 इस्तिंशाक़ और इस्तिंसार में क्या अंतर है?

.....

.....

10 क्या आपको वज़ू के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ याद है? उसको लिखें।

.....

.....

11 गुस्ल का मुस्तहब तथा पूर्ण तरीक़ा क्या है?

.....

.....

12 क्या आपको वज़ू के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ याद है?

.....

.....

वज़ू एक महत्वपूर्ण इस्लामी प्रतीक है

इस तथ्य से हर मुसलमान अवगत है कि वज़ू धर्म का एक महान प्रतीक और गुनाहों एवं पापों से पाक होने का एक माध्यम है। मुसलमानों को क़यामत के दिन इस अवस्था में उठाया जाएगा कि उनके वज़ू के अंग चमकते हुए होंगे। वज़ू करने की क्षमता रखने वाले मोमिन की नमाज़ वज़ू के बिना सही नहीं होती है। इसलिए मोमिन को इसे सीखने एवं सिखाने के लिए अत्यधिक उत्सुक रहना चाहिए।

इस पुस्तिका में मैंने तहारत (पवित्रता), वज़ू और उनके तरीक़े के विषय पर बात की है। इसी तरह आप इस पुस्तिका के साथ संलग्न दृश्य सामग्री के माध्यम से वज़ू के तरीक़े को देख भी सकते हैं।

يجوز

مركز أصول

OsoulCenter

www.osoulcenter.com

CHAT & DECIDE

इस्लाम के बारे में विभिन्न भाषाओं में संवाद करें

GUIDE TO ISLAM

इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी के लिए

इस तथ्य से हर मुसलमान अवगत है कि वज़ू धर्म का एक महान प्रतीक और गुनाहों एवं पापों से पाक होने का एक माध्यम है। मुसलमानों को क़यामत के दिन इस अवस्था में उठाया जाएगा कि उनके वज़ू के अंग चमकते हुए होंगे। वज़ू करने की क्षमता रखने वाले मोमिन की नमाज़ वज़ू के बिना सही नहीं होती है। इसलिए मोमिन को इसे सीखने एवं सिखाने के लिए अत्यधिक उत्सुक रहना चाहिए।

इस पुस्तिका में मैंने तहारत (पवित्रता), वज़ू और उनके तरीक़े के विषय पर बात की है। इसी तरह आप इस पुस्तिका के साथ संलग्न दृश्य सामग्री के माध्यम से वज़ू के तरीक़े को देख भी सकते हैं।

ISO 9001
osoulcenter
www.osoulcontent.org.sa
इस पुस्तक तथा अन्य पुस्तकों को ओसौल स्टोर (OSOUL STORE)
के माध्यम से डाउनलोड करने के लिए :
OSOUL STORE
osoulstore.com